शान्ति के दोहे

1. भक्त वत्सल भय हरन हरि , करुणा शील निधान ,
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख भगवान ....

2. हे समर्थ सर्वज्ञ हरि , दीन बन्धु दातार ,
कह टेऊँ कृपा करे , दे शुभ गुणन भण्डार...

3. मैं माँगत नहिं और कुछ , सन्त दरस हरि देह ,
कह टेऊँ दर्शन करे , सफल करूँ तन एह...

4. इन्द्र राज वैकुण्ठ सुख ,नहिं माँगूँ धन धाम ,
कह टेऊँ मुझ दीजिये , हे हरि अपना नाम....

5. जितने कणके रेत के , उतने अवगुण मोहि ,
कह टेऊँ गुरू बख्श ले , शरण पड़ा हूँ तोहि....

6. सत्गुरु मुझको दान दे , प्रेम भक्ति विशवास ,
कह टेऊँ नित सुमति दे , सन्तन माहिं निवास....

7. सत्गुरु तुम पूरण करो , मेरी यह अर्दास ,
कह टेऊँ मन में कभी , रहे न जग की आस ...

8. सत्गुरु आत्मज्ञान दे , हरे देह अभिमान ,
कह टेऊँ सब घट विषे , दिखलाओ भगवान....

9. रे मन राखो राम में , पूर्ण तुम विशवास ,
कह टेऊँ विशवास से , होवे सब दुख नास....

10. राम भरोसा राख तुम , और भरोसा त्याग ,
कह टेऊँ हरि शरण ले , खोलो अपना भाग.....

11. चिन्ता भोजन वसन की , टेऊँ करते काहिं,
हरि विश्वम्भर दे सबहिं क्या तुम देवहिं नाहिं..

12. उदर भरण के कारने , भटकत काहिं अजान ,
त्यागे चिन्ता पेट की , स्मरो श्री भगवान....

13. कह टेऊँ संसार में , बात यही है सार ,
भजन करो भगवान का , छोड़ो विषय विकार...

14. कह टेऊँ हरि नाम जप , भूलो ना क्षण एक ,
भोगत भोगत विषय रस , बीते जन्म अनेक.....

स
त
ना
म
सा
क्षी

स
त
ना
म
सा
क्षी

स
त
ना
म
सा
क्षी

स
त
ना
म
सा
क्षी

स त ना म सा क्षी

15. मात गर्भ में तुम किया , हरि स□जो इकरार ,
कह टँ□ तिह□याद कर , स्मरो सत्कर्तार ....
16. मन बुध्दि इन्द्रिय प्राण धन , जिह□दीनी नर द□ ,
कह टँ□ तिस राम का , नित स्मरण कर ल□......
17. □र्व □ण्य त□□इया , मानुष का अवतार ,
कह टँ□ तिह□सफल कर , सुमर□सृजणहार ....
18. चौरासी लख योनि का , मानुष है सिरताज ,
कह टँ□ हरि भजन का, कर इस तन में काज....
19. गफ्लत में न ग□ाईय□, मानुष द□ महान ,
कह टँ□ तुम जाग क□, भज ल□श्री भगवान....
20 कह टँ□ तुम च□ ल□, अब कुछ बिगड़ी नाहि□,
दया धर्म शुभ कर्म कर , हरि सुमरो मन माहि□..
21. सोए अविद्या नी□ में , कह टँ□ बहु काल ,
अब तो गफ्लत छोड़ क□, सुमरो दीन दयाल...
22. हरि सुमरो तुम जागक□, सोय न निद्रा माहि□,
कह टँ□ जाग□बिना , हरि दर्शन द□नाहि□..
23. अमृत व□□ऊठ क□, छोड़ कल□ना काम ,
कह टँ□ हरि ध्यान धर , सुमरो गुरु का नाम...
24. प्रातःकाल जो ऊठ क□, करत हरि गुण गान ,
कह टँ□ सो जगत में , होवत स□ सुजान....
25. निश दिन कर शुभ भावना , हरि को जान हजूर ,
कह टँ□ मन स□करो , अशुभ भावना दूर....
26. नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार ,
कह टँ□ शुध्द भाव स□, सब का कर सत्कार ....
27. बुरा भला निज भाव ही , सबको सुख दुख द□ ,
कह टँ□ द□और नाहि□, फलत भाव का ख□...
28. बुरा किसी का ना करो , सबका भला विचार ,
टँ□ बुराई जो कर□, ता□ा कर उ□कार .....
29. कल□ वृक्ष है आत्मा , कह टँ□ सब माहि□,
जा□ी जैसी भावना , तैसा फल द□ताहि□..

स त ना म सा क्षी

स त ना म सा क्षी

स त ना म सा क्षी

स त ना म सा क्षी

30. मन पर साक्षी होय तुम , धर विवेक वैराग ,
कह टेऊँ जे दोष हैं , ताको करो त्याग......
31. थोड़े जीवन हेतु तुम , करो न पाप अजान ,
कह टेऊँ मन जीत कर , पुण्य करो प्रधान....
32. निश्चल मन से मिलत हैं , निश्चल आत्म राम ,
टेऊँ मन निश्चल करे , पाओ सुख का धाम....
33. इष्ट देव भगवान की , करे उपासन जोय ,
कह टेऊँ तिस मनुष्य का , निश्चल शुध्द मन होय...
34. कर्म धर्म जप ध्यान तप , योग यज्ञ व्रत दान ,
कह टेऊँ हरि हेत कर , छोड़ ममत अभिमान...
35. जप तप सेवा कर्म शुभ , तीरथ दान स्नान ,
श्रद्धा बिन फल देत नाहिं, कह टेऊँ सत् मान...
36. प्रेम बिन पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम ,
कह टेऊँ ताते जपो , प्रेम सहित हरि नाम ...
37. प्रेम भाव से होत वश , भक्त वत्सल भगवान ,
कह टेऊँ ताते करो , हरि से प्रेम प्रधान ...
38. जिन-जिन हरि के प्रेम में दीना तन मन प्रान ,
टेऊँ तिन के कदम पर झुक-झुक पड़त जहान...
39. बेमुख हो कर्तार से , करत जगत से प्यार ,
कह टेऊँ तिस मनुष का , कबहू ना होत उध्दार...
40 सत गुरु परमात्मा , साचे सखी जान ,
कह टेऊँ इन तीन से , कर ले प्रेम सुजान....
41. हरि मेली हैं सन्त जन , हरि से देत मिलाय ,
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय....
42. जैसे जल में रहत है , अहनिश कमल अलेप ,
कह टेऊँ तिमि जगत में , सत रहत निर्लेप...
43. सन्त राम में भेद नहिं, सन्त राम स्वरुप ,
कह टेऊँ रट राम को , भय राम के रुप....
44. स्वार्थ बिन सेवा करे , सब को दे सम्मान ,
टेऊँ समता में रहे , सोई सन्त पछान....

स त ना म सा क्षी
स त ना म सा क्षी
स त ना म सा क्षी

सतनाम साक्षी

45. जग में जीते जो मरे , तजे देह अभिमान ,
कह टेऊँ संसार में , सो नर मुक्ता मान..

46. जीवित जग में मरत जो , ता पर छत्र झुलन्त ,
टेऊँ जग तिहँ पूजते ,जान रुप भगवन्त....

47. क्षमा जाके मन बसे , तिस हरि अन्तर नाहिं,
कह टेऊँ सुर नर सभी , दर्शन चाहत ताहिं..

48. क्रोध त्याग क्षमा धरे , सो है पूजन योग ,
कह टेऊँ तिहँ दरस ते , मिट जावत सब रोग...

49. कली काल में कठिन हैं , योग यज्ञ तप ध्यान ,
साधु संग हरि नाम से , टेऊँ हो कल्याण....

50. सत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं,
कह टेऊँ बिन हरि कृपा , सत्संग मिलता नाहिं

51. पार करत भव सिन्धु से , सत्संग परम जहाज ,
कह टेऊँ तामें चढ़ो , छोड़ जगत की लाज........

52. सत्संग से सत्गुरु मिले , सत्गुरु से निज ज्ञान ,
कह टेऊँ निज ज्ञान से , मिलहैं पद निर्बान...

53. सत्गुरु बुध्दि के नैन में, डार अंजन ज्ञान ,
कह टेऊँ तम भ्रम हरि , दिखलावे भगवान...

54. कह टेऊँ भगवान से , सतगुरु अधिक पछान,
कर्मों का फल देत हरि, गुरु दे मुक्ति दान......

55. गुरु बिन रंग ना लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय,
कह टेऊँ सतगुरु बिना, मुक्ति ना पावे कोय....

56. पूरन सत्गुरु देव से , पूरन ले उपदेश ,
कह टेऊँ तिहँ सुमर के , पाओ पूरन देश..

57. सर्व व्यापक जान हरि , सबकी करिये सेव,
कह टेऊँ सब पाप हर , देखो आत्म देव........

58. ब्रह्म आत्मा एक है , सत् चित् आनन्द रुप ,
कह टेऊँ ज्ञानी जिसे , जानत निज स्वरुप ......

59. साक्षी चेतन ब्रह्म का , सब घट में है वास ,
कह टेऊँ शशि सूर्य में , ताका है प्रकाश..

60 साक्षी चेतन रम रहा , जल थल पुनि आकाश ,
कह टेऊँ तिहँ जान के , पाओ सुख अविनाश..........

सतनाम साक्षी

सतनाम साक्षी

सतनाम साक्षी